Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVI, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

स्वामी विवेकानंद का समाजवादी दर्शन

हरीश*

* एम ए, नेट -जेआरफ (इतिहास) कोडुका पोस्ट रिछोली, ब्लॉक पाटोदी बालोतरा (राज.) भारत

प्रस्तावना – स्वामी विवेकानद भारत के एक तेजस्वी सन्यासी थे।कलकत्ता में इनका जन्म हुआ था। बचपन से इन पर इनकी माता का प्रभाव था इन्होने रामायण, महाभारत आदि धार्मिक ग्रंथ लिखे थे। इन्होने भारतीय दर्शन के साथ साथ हीगल, स्टुअर्ट मिल को भी पढ़ा था। इनकी अध्यात्म में काफी रूचि थी। बचपन में स्वामी जी को नरेंद्र नाथ के नाम से जाना जाता था उन्होने खेतड़ी के महाराजा अजित सिंह के कहने पर अपना नाम विवेकानंद रख लिया। ये हिन्दू धर्म के वेदांत दर्शन से काफी प्रभावित थे जो स्वामी जी के चिंतन और व्यवहार का मुख्य आधार था। उनका चिंतन व्यवहारिक जीवन से जुड़ा हुआ था न कि केवल मानसिक जगत में विचरण करने वाला स्वामी जी केवल एक धार्मिक संत नहीं थे वह एक समाजवादी भी थे उन्होंने कहा था में समाजवादी हु उनका समाजवाद मार्क्स के समाजवाद के समान नहीं था वह समाजवाद के शोषणरहित समाज के समर्थक थे । वह गरीबों और कमजोरों के प्रति सहानुभूति रखते थे उन्होंने ईश्वर के लिए दरिद्र नारायण शब्द का प्रयोग किया था उनका मानना था कि मानव कि सेवा ही सर्वश्रेष्ठ सेवा है अत व्यक्ति को मानव कि सेवा को सबसे ज्यादा महत्व देना चाहिए।

विवेकानद बचपन से गरीबों के प्रति सहानुभूति रखते थे एक दिन वह कॉलेज से छूटी के बाद घर जा रहे थे रास्ते में उनको एक बाग दिखाई दिया। उस बाग में उनको एक बीमार साधु दिखाई दिया उनके पास दो साधु रामधनु गाकर उनकी चिकित्सा कर रहे थे वहा के माहौल को देखकर नरेंद्र बोले अंधा क्या कहेगा पहले यही बोलेगा मुझे आँख चाहिए ईश्वर नहीं। आपके गुरु को औषधी कि आवश्यकता है ईश्वर कि नहीं। नरेंद्र रोगग्रस्त साधु को अपने कंधे पर उठाकर डॉक्टर के पास लेके गया। वह रोज उस कुटिया में जाते और साधु कि देखभाल करते। जब साधु ठीक हो गए तो उन्होंने नरेंद्र को आशीर्वाद दिया तुम दुनिया के सबसे अनोखे लाल होंगे भारत के साथ साथ विदेशों में भी आपके गुणों कि सुगंध फैलेगी।

सितम्बर 1893 में विवेकानंद शिकागो धार्मिक सम्मेलन में भाग लेने गए। उनके श्री मुख से निकला पहले शब्द मेरे प्यारे भाइयों और बहनों था। इस बाद उन्होंने अपना भाषण प्रारम्भ किया उनके भाषण के बाद अमेरिका के समाचार पत्र में विवेकानंद कि तारीफों में कसीदे गढ़े गए और एक समाचार पत्र में छपा था कि विवेकानद जैसे व्यक्ति को सुनने के बाद भारत जैसे देश में धर्म प्रचारक भेजना कितनी बड़ी मूर्खता का प्रमाण है।

स्वामी जी को अमेरिका में बहुत बड़े व्यक्ति ने अपने घर पर आमंत्रित किया था। स्वामी जी उसकी आलीशान कोठी को देखकर मुँह लटकाकर बैठ गए। वह कमरे के फर्श पर लेटकर रोने लगे और कहने लगे कि माँ जब मेरी मातृभूमि दरिद्रता के कीचड़ में डूबी पड़ी है तो में ये यश नाम लेकर क्या करूँगा कोई भारत को कीचड़ से बाहर निकालेगा। कौन भारत कि जनता को जगायेगा, कौन भारत कि भूखी जनता को रोटी देगा, माँ मुझे बताओ में कैसे इन भूखे नंगो कि सहायता करू। जब घर का मालिक आया तो उसने स्वामी जी को इस तरह विलाप करते देखा तो बिना बताये बहुत सारा धन भारत भेजा। साथ ही भारत सरकार को लिखा कि इस धन से भारत के गरीब लोगों कि मदद कि जाएं।

इस प्रकार स्वामी जी जहाँ भी जाते थे उन्हें अपने देश के गरीब लोगों की चिंता हमेशा सताती रहती थी। अमेरिका में उन्होंने रामकृष्ण मिशन की अनेक शाखाएँ स्थापित की और अनेक लोगों को अपना अनुयायी बनाया। उन्होने भारत के लोगों के लिए अमेरिका से संदेश भेजा की मेरे बच्चो कमर कस लो मुझे ईश्वर ने इसलिए बुलाया है मेरी आशा तुम हो दुखियों के दर्द को समझो। ईश्वर से विनती करो वो आपका दु:ख जरूर समझेंगे इस प्रकार वो जहाँ भी गए उनके मन में हमेशा अपने देश के गरीब लोगों की चिंता रही।

स्वामी जी ने भारतीय उच्च वर्ग की खुलकर आलोचना की। उनका मानना था की उच्च वर्ग सिर्फ हवा बड़ी बड़ी बातों के गुब्बारे छोड़ता है किन्तु गरीब तबके के लिए कोई काम नहीं करता उनको घृणा की दृष्टि से देखता है। एक बार उन्होन किसी भाषण में कहा था अपने आर्य पूर्वजो के डींगे ही हाकते रहोगे ?, अपने स्वर्ण युग का गुणगान करते रहोगे आप सभी उच्च वर्गीय लोग ऐसी लाशे हैं जिनमे घास फूस भरकर जिनको खड़ा किया गया है। बुद्धि और चौतन्य खोई हुई इन लाशों के कारण सारा देश श्मशान बन चूका है इन लोगों के घर अजयाबघर बन गए है। ये उच्चवर्गीय लोग अतीत का हाथ थामे हुए है इनका भविष्य शून्य है।

वह लोगों से कहते की हम खुद अपने पतन के जिम्मेदार है। यहां की सामंतवादी शासन व्यवस्था ने देश की आम जनता को बुरी तरह झखजोर दिया है।यहां के देशी और विदेशी दोनों शासको ने आमजन पर अत्याचार किए जिस कारण आमजन भूल गए है कि वो इंसान है उन्हें सदियों से लकड़हारा बना रहने के लिए बाध्य किया गया।

इसलिए मेरे भावी सुधारको तुम अपने देश के लिए कुछ करो वह सामाजिक मामलों में धर्म को को शम्मिल करना पसंद नहीं करते थे उन्होने उच्च –नीच जात –पात का खुलकर विरोध किया। उनकी नजरो में सब मनुष्य ईश्वर के पुत्र है उन्होंने कहा गरीब अभावग्रस्त, पीड़ित सभी आओ हम रामकृष्ण कि शरण में एक है। स्वामी जी कहते थे कि हमे मंदिर में जाकर शंख बजाना, और घंटा बजाना यह सब बंद कर देना चाहिए। व्यक्तिगत मोक्ष के

लिए किए जाने वाले सारे काम बंद कर देने चाहिए। शास्त्र पठन – पाठन इन सभी से मोक्ष नहीं मिलता अगर मोक्ष प्राप्त करना है तो हमे गरीब, पीड़ितों कि सेवा का बीड़ा उठा लेना चाहिए।

स्वामी जी ने भारतीय शिक्षित वर्ग को भी बुरी तरह लताड़ा उन्होने कहा जब तक करोड़ों लोग अज्ञान में घोटे खा रहे तब में पढ़े लिखे हर व्यक्ति को विश्वाघातक मानूगा जिन्होंने उनकी कमाई से शिक्षा प्राप्त कि और उन पर ध्यान नहीं दिया। उन्होने कहा उच्च वर्ग का नैतिक रूप से पतन हो चूका है अब उनको एकमात्र आशा आमजन से है। ब्राह्मण कि शिक्षा जारी रखिए मगर अत्यंज पर भी सारा धन खर्च कीजिए। इस प्रकार उनका पूरा जीवन गरीब और असहाय लोगों के लिए काम करते हुए बिता।

इस प्रकार स्वामी जी ने एक ऐसे समाज की कल्पना की जिसमें धर्म जाति के आधार पर किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जाए। उन्होंने वेदांत के सिद्धांत को इसी रूप में रखा। आध्यत्मवाद और भौतिकवाद में पड़ने के बजाय उन्होने मानवतावाद पर बल दिया। आमतौर पर स्वामी विवेकानंद को भारत में एक हिन्दू धर्म के उद्धारक के रूप में जाना जाता है किन्तु स्वामी जी एक बहुत बड़े समाजवादी थे। वो धर्म से ज्यादा समाज सेवा को महत्व देता है। उनका शोषणरहित समाजवाद अपने आप भारत में एक अनूठा दर्शन है। सुभाष चंद्र बोसे ने विवेकानद को राष्ट्रीय आंदोलन का आध्यात्मिक पिता कहा था। स्वामी जी जीवन भर रामकृष्ण मिशन केमाध्यम से दीन दुखियों की सेवा करते रहे।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. ग्रोवर, यशपाल, आधुनिक भारत का इतिहास नवीन मूल्यांकन, एस चंद एण्ड कम्पनी 2000,नई दिल्ली।
2. ताराचंद, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, सुचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार 1997
3. रावत नवल, विवेकानंद की क्रांतिकारी शिक्षाए 2017, विज्ञान शिक्षण केंद्र दिल्ली।
4. भडभडे शुभांगी, विवेकानंद तुम लौट आओ, 2024, प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली।
5. त्रिपाठी मधुसूदन, त्रिपाठी कुमार आदर्श, स्वामी विवेकानंद का जीवन दर्शन,2014 , ओमेगा पब्लिकेशन नई दिल्ली।
6. विगत राधेश्याम, भारत गौरव विवेकान्द, प्रगति प्रकाशन, 2008, मथुरा।
7. वर्मा संगीता, भारत के निर्माता –4, 2016, वर्तिका पब्लिकेशन दिल्ली।

****